www.faithbook.in

Faithbook™
ACTIVITIES BEYOND BOOK

09th MAY 2021
Issue 13

BOOK 025

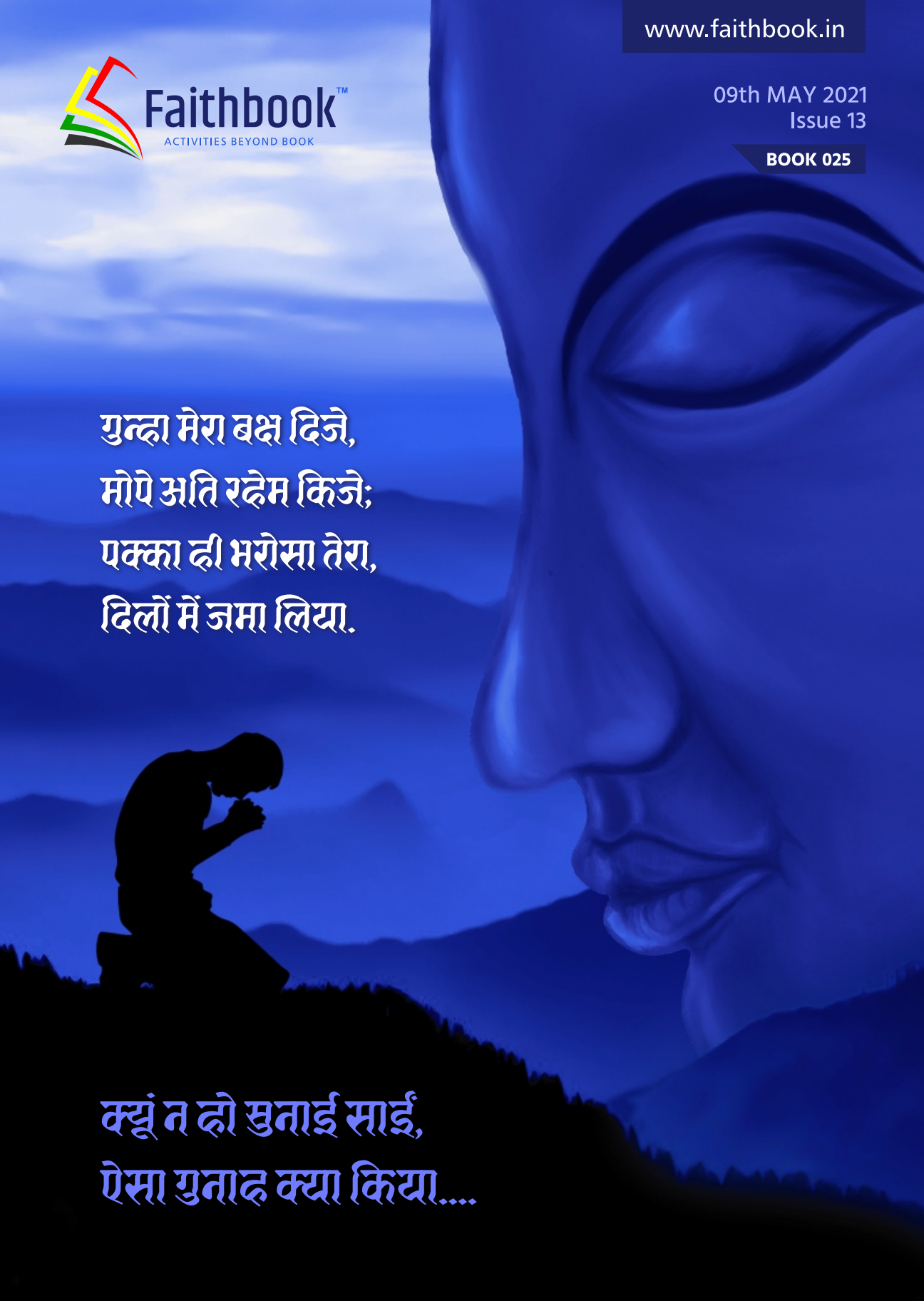

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

श्रुतसरिता का प्रवाह

सादर प्रणाम,

तीर्थंकर परमात्मा की सर्वज्ञता से प्रादुर्भूत हुई श्रुतसरिता को गणधर भगवंतों ने ग्रहण किया और परंपरा में आये हुए आचार्यों द्वारा अविरत प्रवाहित होती यह श्रुतसरिता अब हम तक पहुंची है। और वह पांचवां आरा के अंत तक प्रवाहित रहेगी। इस पावन श्रुतसरिता में स्नान करके अनेक आत्माओं अपने कर्ममल को धोकर निर्मल बनती हैं। इस श्रुतसरिता में अनेक जीवों के मिथ्यात्व धोएं जाते हैं, कषायों का कचरा साफ होता है और अवगुण पिघल जाते हैं।

Faithbook की Knowledge Book भी उसी श्रुतसरिता का एक छोटी-सी बुंद के रुप में हम सभी के लिए प्रस्तुत किया जाता है। उसके पठन से सभी पाठकों को आत्मनिर्मलता प्राप्त हो यही शुभाभिलाशा!!

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

आहार शुद्धि और आरोग्य 01
पू. ग. आ. श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

धर्मात्मा दुःखी और पापी सुखी, ऐसा क्यों? 04
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

प्रभु की शुद्ध चेतना... 09
पू. पं. श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline 7.0 11
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

उपबृंहणा का उत्सव 14
प्रियम्

गोडीजी का इतिहास 18
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

कल्याणकारी क्रिया 22
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

अलग दृष्टिकोण 24
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 12 26
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : www.faithbook.in

आहार शुद्धि और आरोग्य

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

हमारे परम हितैषी महर्षियों ने अपनी विशिष्ट बुद्धि शक्ति और वैज्ञानिक प्रतिभा से, सात्त्विक और संस्कारमय जीवन जीने के लिये क्या खाना चाहिये? और क्या नहीं खाना चाहिये? इस संबंध में विधि निषेधों का ज्ञान कराया है। इसमें भी जैन महर्षियों ने तो सिर्फ शारीरिक दृष्टी से नहीं अपितु आत्मा को दुःख पहुंचाने वाली हिंसा, पाप, आसक्ति, मानसिक प्रसन्नता, आत्मिक स्वस्थता, शारीरिक निरोगिता, हृदय की कोमलता, इह-लोक-परलोक के श्रेय हेतु आहार शुद्धि के विषय में विस्तृत तथा तलस्पर्शी विचार व्यक्त किये हैं। उन्होंने 'अभक्ष्य पदार्थों का त्याग परम सुखकर है' यह तथ्य जगत के सम्मुख प्रस्तुत किया हैं।

मनुष्यों को दिन-ब-दिन आत्म संयम धारण कर, अनादिकालीन आहार संज्ञा पर काबू प्राप्त करना चाहिये। जिससे आत्मा अनाहारीपद अर्थात् मोक्ष को प्राप्त हो। मोक्ष में सदाकाल देह और आहार का अभाव रहता है।

'जैसा खाय अन्न, वैसा होय मन' हिन्दी की प्रसिद्ध लोकोक्ति है। मन की निरोगिता, संयमीतता, पवित्रता और धर्मप्रियता में आहार का विशेष स्थान है। आर्य देश में मानव के लिये आर्यभूमि का अन्न ही उपयुक्त रहता है। न कि अनार्य भूमि का तामस भोजन। सत्य नीति और न्याय प्राप्त वनस्पति-धान्य आदि खाद्य वस्तुएँ मानसिक-शारीरिक रोग, दृष्ट विचार और दूसरों का अहित करने की भावनाओं से बचाती है। शुद्ध गुणकारी आहार के लिए जीवन में नीतिमत्ता, सत्य और प्रमाणिकता का सहि असर होगा। अतः धनो-पार्जन के लिए न्याय सम्पन्नता आवश्यक है। जीवन-शुद्धि का यह मूलाधार है।

भोजन का संबंध मन और आत्मा के साथ होने के कारण आहार का महत्व बहुत अधिक माना गया है। इसलिए जैनशास्त्रकारों ने भोजन संबंधी विचार के केन्द्र में मन और आत्मा को स्थान दिया है और जीवन के सुख, शान्ति समाधि और पारलौकिक हित को लक्ष्य में रखकर आहार विषयक विधि-निषेध बतलायें हैं।

'जैसा खाय अन्न वैसा मन, जैसा मन वैसे विचार, जैसे विचार वैसी किया, जैसी क्रिया वैसा फल।'

कतिपय लोगों का कहना है कि 'तो पेट भरने से वास्ता है। जो भी मिला वह खा लिया, इसमें नाहक माथापच्ची कैसी? परन्तु यह कथन योग्य नहीं है। यदि स्पष्ट भाषा में कहे तो मनुष्य का अहित करने वाला है। हमारा पेट कोई कचरा पेटी नहीं है, कि जिसमें जी चाहे जो चीज डाल दी जायें? पेट हमारे शरीर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिसमें कोई भी वस्तु या पदार्थ डालें, तो उसकी प्रतिक्रिया होती है। इतना ही नहीं सम्पूर्ण देह और मन पर भी उसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

जो स्वादु लोग बिना विचार कुछ भी खा लेते हैं, वे नाना प्रकार की व्याधियों के शिकार बनते हैं। और मृत्यु के मुँह में भी फंस सकते है। हम आये दिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि आहार में फुड-पोइजन से इतने-इतने आदमी मर गए, इतने आदमी को उल्टी और दस्त की शिकायत हो गई. कुछ लोगों की हालत गम्भीर हैं। क्या यह सब बातें हमें इस बात की चेतावनी नहीं देती है, कि हमें आहार के विषय में सावधानी और विवेक रखना चाहिए?

जिन्हें हम पशु कहते हैं और अपने से निम्न कोटि को समझते हैं, वे भी सबसे पहले किसी पदार्थ को सूँघते हैं, जाँचते हैं और अपने अनुकूल प्रतीत होने पर ही उसे खाते है, तब विवेकवान मनुष्य पूरे विचार, पूरी जाँताल, गुण-दोष का विचार किये बिना किसी भी वस्तु को कैसे खा सकते हैं?

अनेक रोगों के कारणों की सूक्ष्मता पूर्वक जाँच करने से मालूम होता है, की बासी या द्विदल, तुच्छ फल या अज्ञात फल, चलित रस या गिला

अचार, माँस या मदिरा, मधु या मक्खन, बर्फ या ओले, बहुबीज या अनंतकाय, रात्रि भोजन या जमीकंद, बाजारु या टीनफुड पदार्थों आदि का भक्षण अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देता हैं, विशेषत: मानसिक स्वास्थ्य की हानि करता हैं, विकार वासना को उत्तेजित करता है, शरीर के राजा वीर्य को नष्ट करता है, कलुषित भावों तथा क्रोधादि को पैदा करता है, आत्मा को धर्म विमुख और कठोर हृदयी बनाता है। दुर्बुध्दि वश परलोक में नरक अथवा पशु की गति सुलभ हो जाती है। जीवन में आहार शुद्धि का महत्व जानते हुए भी हम शुद्ध आहार न करें तो दीपक लेकर कुएं में गिरने जैसा ही है।

तामसी भोजन में प्याज, लहसुन, माँस, मछली, मदिरा, शहद, मक्खन, अंडे, आमलेट, आदि हिंसक भाव पैदा करते हैं। पेट में गया भोजन शरीर, मन और आत्मा को अवश्य प्रभावित करता है। फ्रांस के साम्राज्य की प्रगति में परिवर्तन होने का कारण यह था कि जब मस्तिष्क को संतुलित रखने की जरूरत थी, तब लहसुन खाने के बाद आक्रमक बने नेपोलियन ने अपनी सेना को सही मार्गदर्शन करने में भूल की। परिणाम स्वरूप लिप्झीग के महत्वपूर्ण युद्ध में उसे पराजय का सामना करना पड़ा।

माँस, मदिरा, प्याज, लहसुन जैसी तामसी खुराक बात-बात में क्रोध अशान्ति भड़ाकाने का कार्य करते है। मन के बेकाबू बनने पर हिंसक और अनुचित कार्य करने में देर नहीं लगती है, बाद में पश्चाताप् का भी पारावार नहीं रहता है, कि "मैंने मूर्खता में ऐसी गम्भीर भूल कर दी। "

अनुभवी वैद्य तथा डॉक्टरों का यह निष्कर्ष है कि अधिकतर शारीरिक रोग अनुचित खान-पान का परिणाम है। अतः भोजन में भक्ष्य (अर्थात् खाने योग्य) और अभक्ष्य (अर्थात् न खाने योग्य) का विचार करना आवश्यक है।

स्वाद विजय बिना विषयों पर विजय प्राप्त करना असम्भव है। डॉ. काउएन कहते है कि, 'काम-वासना को उत्पन्न करने में दोषित भोजन (शराब, मांस, मधु, मक्खन, अंडे आदि) मुख्य है। डॉ. ब्लोच कहते हैं कि, 'मिठाइयाँ और कुप्रवृत्तियों का घनिष्ठ संबंध है। जो बालक मिठाई के बहुत शोकीन है, उनके पतन की संभावना अधिक रहती है। डॉ. किलोग का कथन है कि 'अच्छे बुरे आहार का प्रभाव शारीरिक क्रियाओं पर पड़ता है। हमारे विचारों का निर्माण भी भोजन से होता है। जो मनुष्य अचार, मैदे की रोटी, मिठाई, माँस, मछली, अंडे आदि खाते है, चाय, कॉफी, वाइन आदि पीते है और तम्बाकू का सेवन करते हैं, उनके लिए अपने विचारों का पवित्र रखना तो वायुवान की सहायता बिना आकाश में उड़ने के समान है।

धर्मात्मा दुःखी और पापी सुखी, ऐसा क्यों?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

इस भव में लोन या ब्याज कुछ भी वापस नहीं करना है, लेकिन परलोक में आना, पाई, ब्याज, सिक्के समेत चुकाना पड़ेगा। ऐसा करार करने वालों को बिना कोई जान-पहचान के भी लाखों रुपये की लोन देने वाले आस्तिक सेठ से चार चोरों ने लाख-लाख रुपये की लोन ली और अपने वतन की ओर निकले। रात को बीच में एक गांव आया, वहां घांची की घाणी (कोल्हू) वाले स्थान में रुके। पशुओं की भाषा जानने वाले छोटे चोर ने दो बैलों की बातें सुनी कि, भवांतर में घांची का बैल बनकर भी कर्ज चुकाना पड़ता है, यह जान-कर वह काँप उठा। चारों चोर वापिस लौटे और सेठ को लाख-लाख रुपये वापस लेने के लिए आग्रह करने लगे। पर सेठ तो परलोक में ही वापस लेने के करार पर अड़े रहे, तो चारों चोर किसी संत की शरण में गये, और अपनी परेशानी उन्हें बताई।

संत ने मार्गदर्शन दिया, पहली बात, इस तरह कर्ज लेना ही नहीं चाहिये। अब यदि ले ही लिया है तो इसी जन्म में ही उसकी भरपाई कर देनी चाहिये। पर यदि लेनदार मना कर रहा है, और तुम्हें परलोक में कर्ज लेकर नहीं जाना है, तो तुम्हें उतनी रकम का सुकृत करना चाहिये। पर कहीं पर भी तुम्हारा नाम नहीं आये, या किसी को पता ना चले इसकी बहुत सावधानी रखनी है, और आपके बदले उस लेनदार का नाम घोषित करना चाहिये। उसके नाम से यह पूरा सुकृत और पुण्य कर दो। प्रभु से भी अंतःकरण से प्रार्थना करो कि इस सुकृत का पुण्य उसे प्राप्त हो जाये।

हमारे यहाँ ऐसी बात आती है कि, एक भक्ति संपन्न श्रावक अपनी न्यायोपार्जित संपत्ति से प्रभु-प्रतिमा का निर्माण करवा रहा था। उसकी जानकारी के अनुसार यह संपूर्ण संपत्ति उसकी खुद की ही, अपने हक की ही है, फिर भी अपनी जानकारी के बाहर, दूसरे किसी के हक की संपत्ति का अंश भी इसमें आ गया होगा तो? ऐसी शंका है। तो शास्त्रकारों ने दर्शाया है कि उस श्रावक को ऐसी भावना करनी चाहिये कि, यदि ऐसा कोई अंश इस संपत्ति में शामिल हो गया हो तो, उतने अंश का पुण्य उस हकदार भाग्यशाली को प्राप्त हो जाये। अस्तु...।

हमारी बात यह थी कि अनीति को टालना चाहिये। और उसे इसलिए टालना चाहिये कि, भविष्य में उसके कारण से धनप्राप्ति अति दुर्लभ बनती ही है, पर वर्तमान में भी धनप्राप्ति में अंतराय आ जाते हैं।

प्रश्न :

पर महाराज साहेब! हमारा अनुभव तो ऐसा है अनीति से धनप्राप्ति में अंतराय नहीं पर अनीति से धनप्राप्ति सरल हो जाती है। पैसा बनाना हो तो अनीति करनी ही पड़ती है। अनीति से ही पैसा मिलता है। अल्पकाल में ही करोड़पति बनने वाले को देखकर हमें ऐसा ही विचार आता है कि कुछ उल्टा-सीधा किया होगा। नहीं तो इतने कम समय में इतने पैसे मिलते ही नहीं है। फिर अनीति से अंतराय होने की बात कहाँ आती है?

उत्तर :

सूरिपुरंदर श्री हरिभद्रसूरि महाराज ने श्री शास्त्र-वार्ता समुच्चय नामक ग्रंथ में कहा है कि

"सुख धर्मात् दुःखं पापात् सर्वशास्त्रेषु संस्थितिः।"

अर्थ : दुनिया के किसी भी धर्मशास्त्र में दर्शायी हुई कोई एक समान बात है तो, यह है कि सुख धर्म से मिलता है, दुःख पाप से आता है। इस बात पर किसी को कोई भी मतभेद नहीं है।

अनीति भी पाप है, इसलिए उससे दरिद्रता का दुःख आयेगा ही, श्रीमंत का सुख नहीं!

और दुनिया का निरीक्षण करेंगे तो पता चलता है की धर्मी लोग कम हैं और सुखी लोग भी कम हैं। पापी बहुत हैं और दुःखी लोग भी बहुत हैं। यह वास्तविकता भी हमें इसी नतीजे पर लाती है कि सुख धर्म से मिलता है और दुःख पाप से आता है।

प्रश्न :

पर महाराज साहेब! आजकल तो विपरीत ही देखने को मिलता है। जो पाप करने में No.1 है, वह मजे करता है, और दूसरी तरफ धर्मात्मा लोग जैसे-तैसे अपना जीवन गुजार रहे हैं।

उत्तर :

एक व्यक्ति को राष्ट्रपति ने किसी अवॉर्ड से नवाजा, और दूसरे को कोर्ट ने सजा दी। इन दोनों ने क्या किया होगा, यह आपको नहीं पता। पर यदि

आपसे पूछा जाये कि, बोलो, पहले ने क्या किया होगा? और दूसरे ने क्या किया होगा?

'पहले ने कुछ अच्छा काम किया होगा, और दूसरे ने कोई गुनाह किया होगा।'

'यदि इससे विपरीत हो तो?'

'महाराज साहेब! हो ही नहीं सकता। अच्छे काम की सजा और गुनाह का अवॉर्ड... Impossible...

'यह सिर्फ आपका ही अभिप्राय है या औसतन किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति का?'

'महाराज साहेब! जिसमें थोड़ी-सी भी अक्ल होगी उसका जवाब यही होगा।'

'ठीक... तो श्री हरिभद्रसूरि महाराज ने भी यही तो कहा है, अच्छा काम यानी धर्म, अपराध मतलब पाप। सुख कुदरत द्वारा दिया हुआ अवॉर्ड है और दुःख कुदरत द्वारा दी हुई सजा है। बोलो सारी कड़ियां मिल रही है ना?

'पर धर्मात्मा दुःखी और पापी सुखी, ऐसा उल्टा भी कई बार देखने को मिलता है, उसका क्या?'

'लगभग दस बजे के आस-पास डॉक्टर के पास गये हुए दो मित्रों में से एक ने शिकायत की कि, 'डॉक्टर साहब! कितनी विचित्र बात है। मैंने सुबह से कुछ नहीं खाया है, फिर भी मैं पांच बार टॉयलेट जाकर आया, और मेरे इस मित्र ने पेट भरकर नाश्ता किया था, फिर भी एक बार भी नहीं गया।'

'तूने आज भले ही कुछ भी नहीं खाया हो लेकिन कल तूने क्या खाया था?'

'डॉक्टर साहब! कल मैंने खमन ढोकले खाये थे, बहुत टेस्टी थे, भरपेट खाये थे।'

'बस उसी के कारण तुझे आज पांच बार टॉयलेट जाना पड़ा, समझ में आया?'

क्या आपको समझ में आया? आज बार-बार टॉयलेट जाना पड़ रहा है, उसका कारण बीते हुए कल में भी मिल सकता है। उसी तरह इस भव में दुःखी रहने का कारण पूर्वजन्म में भी मिल सकता है। और इसी तरह इस भव में सुख ही सुख मिलने का कारण भी पूर्वजन्म में मिल सकता है। इस भव का पापी लेकिन सुखी व्यक्ति पिछले भव में धर्म करके आया है। इस भव का दुःखी लेकिन धार्मिक व्यक्ति पिछले भव में पाप करके आया है, ऐसा अनुमान अवश्य कर सकते हैं। पर सुख धर्म से मिलता है, और दुःख पाप से आता है, इस नियम में अपवाद नहीं है।

एक लकड़हारा और उसकी पत्नी रोज जंगल में लकड़ियां काटने जाते थे। उनका नियम था कि जो सूखी लकड़ियां मिलेगी वे ही लेंगे, पेड़ से हरी लकड़ियां नहीं काटेंगे। वे सुबह-सुबह निकल जाते थे, थोड़ा बहुत मिल जाता था तो गाँव में वापस आ जाते थे। बाजार में जाकर उस लकड़े को बेचते थे। उससे जो भी पैसे मिलते थे उससे अपना सामान खरीदते थे और दिन पूरा करते थे। यह उनकी रोज की चर्या थी।

एक दिन इसी तरह निकले, जंगल में प्रवेश किया ही था कि एक सूखी लकड़ियों की गठरी दिखाई दी, तो लकड़हारे की पत्नी ने कहा कि, 'चलो! आज की मेहनत टल गई! यह गट्ठर लेकर गाँव में वापस चलते है।'

लकड़हारे ने मना कर दिया, 'किसी ने मेहनत करके लकड़ियां चुन-चुन कर गठरी बनाई है। बेचारा कहीं पर पेशाब-पानी करने गया होगा, हम बिना हक का कैसे ले सकते हैं? चल- चल! हम अपनी मेहनत की लकड़ियां चुनते हैं!

दोनों जंगल में आगे बढ़े, पर योगानुयोग आज एक भी सूखी लकड़ी नहीं मिली। (जो भी थी, वह सारी उस व्यक्ति ने चुन ली होगी) दोपहर हो गई, शाम होने को आ गई। पर एक भी लकड़ी नहीं मिली। खाली हाथ वापस लौटे, और उस दिन भूखा ही सोना पड़ा। रात को पत्नी ने लकड़हारे से कहा, 'यदि वह लकड़ियों की गठरी हमने ले ली होती तो इस तरह भूखा नहीं सोना पड़ता।'

'तू अभी भी नहीं समझी?' लकड़हारे ने कहा।

'सब समझ गई। यह नीति ही पूँछ पकड़ कर रखी इसलिए तो भूखे रहने की नौबत आ गयी।'

'नहीं! यह तूने गलत समझा है, सच तो कुछ और ही है।'

'क्या'?

उस समय लकड़हारे ने जो कहा, उसे सभी को दिल की डायरी में लिखकर रखना चाहिए।

लकड़हारे ने कहा कि, 'बिना हक का लेने का सिर्फ सोचा तो हमें भूखा रहना पड़ा, यदि सच में ले लिया होता तो क्या से क्या हो सकता था?'

इस तरह (अनीति आदि) पापों से (पैसे की प्राप्ति रूप) सुख मिल जाये, यह कभी भी संभव नहीं है। ऊपर से अनीति से अंतराय आते हैं। इस बात को हम अन्य रूप से भी समझ है कि गुनाह की gift होती है? – Impossible!

एक बैंक है। वह अपने account holder को दो प्रकार की चैक बुक देती है। एक चैक बुक के सभी चैक काले हैं, और दूसरी चैक बुक के सारे चैक व्हाईट हैं। यदि ब्लैक चैक लिखा जाये तो जल्दी clear होता है और पैसे हाथ में आ जाते हैं। पर यदि व्हाईट चैक लिखें तो clear होने में देर लग जाती है। कभी-कभी 2/4 महीने भी लग जाते हैं।

बोलो, लोग कौन सा चैक डालेंगे?

'महाराज साहेब! ब्लेक चैक ही ना... तुरंत पैसे हाथ में आ जाते हैं!

'हाँ! पर यदि इस बैंक की सिस्टम आपको मालूम पड़ेगी तो आपका अभिप्राय बदल जायेगा। एक खातेदार ने 1 लाख का ब्लेक चैक लिखा, शीघ्र क्लियर हो गया, उसे 1 लाख रुपये मिल गये। पर बैंक ने उसकी बैलेंस में से 10 लाख कम कर दिये। हाँ! इस बैंक में एसी सिस्टम है कि यदि कोई ब्लेक चैक डालेगा तो कम से कम 10 गुना पैसे उसके account से debit हो जाएगा। पर यदि कोई व्हाईट चैक डालेगा तो क्लियर होने में थोड़ी देर लगेगी, पर 1 लाख का हो तो 1 लाख ही debit होगे 10 लाख नहीं।

बोलो, अब कौन- सा चैक लिखना है?

कुदरत की भी एक बैंक है। जिसमें सारे जीवों का पुण्य बैलेंस में होता है। किसी भी जीव को जब 1 रुपया मिलता है, तब इस पुण्य का चैक डाले बिना नहीं मिलता। और चैक डालोगे तो बैलेंस कम होगी, होगी और होगी ही। अनीति ब्लेक चैक है, और नीति व्हाईट चैक है। (एक बात समझने जैसी है कि, सिर्फ चेक लिखने से कभी भी पैसे नहीं मिलते है। बैलेंस होगा तो ही पैसे मिलेंगे, और यदि बैलेंस नहीं होगा और चेक लिखेंगे, या बैलेंस से ज्यादा रकम का चैक overdraft तो वह bounce होगा, और ऊपर से केस हो जाता है, सजा हो जाती है।)

इस हुंडा पंचमकाल का दुष्परिणाम यह है कि ब्लेक चैक जल्दी clear हो जाता है, ऐसा लोगों को अनुभव होता है। White cheque clear होने में बहुत देर लगती है, ऐसा लगता है, ऐसा अनुभव होता है। इसीलिए लोग अनीति की ओर बढ़ते रहते है। हाँ, नीति से जब मानव 1 लाख रुपये प्राप्त करता है, तब कुदरत की बैंक उसके बैलेंस में से 1 लाख रुपये जितना ही पुण्य debit करता है। पर यदि मानव अनीति का ब्लेक चैक cash करता है, तब यह बैंक उसके पुण्य बैलेंस में से, जो पुण्य नीति से (व्हाईट चेक से) cash करवाया होता तो कम से कम 10 लाख रुपये दिला सके उतने पावर वाला था, उतना पुण्य debit कर डालता है। यह तत्काल 1 लाख रुपये का अंतराय हुआ कि नहीं?

(भविष्य में तो बंधे हुए पापों के कारण अंतराय होने वाला ही है।)

याद रखना चाहिये कि! लाख रुपये जो मिले हैं, वे अनीति से नहीं, पर पुण्य से ही मिले हैं ना? और 1 लाख रुपये का जो अंतराय हुआ है, वह अनीति से हुआ है।

इस तरह, अनीति से अंतराय बंधता है, यह बात स्पष्ट है।

हालांकि इस बात को हमने बैंक के दृष्टांत से देखा, इस बात को शास्त्रीय तर्क से आगामी लेख में देखेंगे।

प्रभु की शुद्ध चेतना...

पूज्य पंन्यास श्री लब्धिवल्लभ विजयजी म.सा.

माता से अलग होना अगर भौतिक जन्म है,
तो शरीर से अलग होना आध्यात्मिक जन्म है।
अलग हुए बिना जन्म नहीं होता,
प्रभु गर्भ में थे तो माता के साथ जुड़े हुए थे,
जुड़ाव हटा, और जन्म हुआ!
स्वतंत्रता छूटने से ही तो आती है।
और माँ वो है जो पुत्र की स्वतंत्रता से प्रसन्न होती है,
नौ मास के बाद कोई माता नहीं चाहेगी कि
पुत्र जुड़ाव की जेल में बंधा रहे...।
नौ मास भी जो बंधन था, वह भी मुक्ति के लिए था,
जन्म है क्या? बंधन से मुक्ति
लेकिन शरीर से शरीर की मुक्ति होने से
आत्मा खाक मुक्त होगी?
शरीर से मुक्त होना भी आत्मा की अधूरी मुक्ति है,
और अधूरी मुक्ति को मौत कहते हैं।
पूर्ण मुक्ति तो वह है जहाँ शरीर के कारणों से भी
आत्मा छूट जाए,
शरीर धारण करने का कारण है कर्म, और कर्म का कारण है,
अपने आपसे बिछड़ जाना, मोह, इच्छाएँ...।

प्रभु जन्म लेते समय सिर्फ गर्भ से ही नहीं, पर
शरीर, कर्म और राग-द्वेष, इन सबके जुड़ाव से परे थे,
प्रभु सब कुछ पास में होने पर भी उनके पास में न थे,
'सब' था पर 'कुछ' न था।

च्यवन होने की घटना को प्रभु नहीं जान पाए थे,
जन्म होने की घटना को प्रभु साक्षी बने,
लेकिन जाना/अनजाना का कोई महत्त्व नहीं है प्रभु को,
अवस्थाओं को जाना तो भी क्या? नहीं जाना तो भी क्या?
जानने वाला जानने में आ रहा है,

यही ज्ञान है।

इसके अतिरिक्त सब आभास मात्र है...।

प्रभु का जन्म होते ही प्रभु ने जाना था, जान रहे थे कि

56 दिक्कुमारियाँ आएगी या आ रही हैं,

सौधर्मेन्द्र आएँगे, या आ रहे हैं

अखिल प्रकृति में उल्लास की अभिव्यक्ति आएगी या आ रही है,

ये सारा स्पंदन यूँ तो प्रभु के ही पुण्य से आविर्भूत हुआ था,

हो रहा था, किंतु

प्रभु उस पुण्य के संबंध से अलिप्त केवल शुद्धि, अपनेपन में

आस्थित थे...।

जब तक हम प्रभु के आंतरिक स्वरूप को नहीं समझते,

तब तक हम जन्म मना सकते हैं, कल्याणक नहीं

जन्म शरीरधारित घटना है, और कल्याणक वो है,

जो इस घटना में होते हुए भी घटना से अतिक्रांत है...।

उनका स्मरण भी कल्याण कर देता है...।

क्या है वो?

प्रभु की शुद्ध चेतना... जो हमारे भीतर भी प्रगट हो सकती है।

बस आवरण है, और वह आवरण यह कि उसे नहीं जानना है।

प्रभु के स्वरूप को जानने से

हम अपने आप को जान सकते हैं,

आवरण टूटता है...

और आत्मस्वरूप भगवान प्रकट हो जाते हैं।

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी की रजनी में

चन्द्र की ज्योत्सना अधिकाधिक विराट, सौम्य, शुभ और आनंदवर्धक बन रही थी,

सोए हुए लोग उठ गये,

क्योंकि निद्रा श्रमवश लगती है।

सारा श्रम दूर हो गया...।

तन-मन ऊर्जाओं से व्याप्त हो गया...।

क्योंकि जिनको आनंद के लिए कारण की अपेक्षा न थी,

उनका आगमन हो रहा था...।

Everything is Online, We are Offline 7.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

भारत देश में रहने वाले लोगों को आज तक ऐसा लग रहा था कि, हम प्रजा हैं और राजा हमारे सुखों के लिए प्रतिबद्ध है।

राजा वह होता है, जो प्रजा को प्रसन्न रखने के लिए प्रयत्नशील होता है। प्रजा को सुखी देखना चाहता है वह राजा होता है। और गुलाम वह होता है, जो अपने मालिक को प्रसन्न रखने के लिए प्रयास करता है। जो अपने मालिक को खुश करने के लिए जान तक दे दे, वह गुलाम होता है। जो अपनी प्रजा को सुरक्षित रखने के लिए जान न्यौछावर कर दे वह राजा होता है।

वर्तमान में जो भी लोग से शीर्ष पदों पर आसीन हैं, वे सब राजा हैं या मालिक? और हम प्रजा हैं या गुलाम? इस बारे में अधिकांश लोग असमंजस में हैं।

उलझन इसलिए भी है, क्योंकि हमारी सुविधा की बातें करके जो काम किये जा रहे है, उस से आखिर हमारी दुविधा ही बढ़ रही है।

पहली बार ऐसी बीमारी ने इस विश्व में दस्तक दी है, जिसमें दवाई लेने वाले मर रहे हैं और दवाई से दूर भागने वाले अच्छे हो रहे हैं।

खुली हवा में साँस लेने की आजादी भी अब हमारे हाथों से छीनी जा रही है। हमने इतनी गुलामी सन्-1947 से पहले भी कभी सुनी नहीं थी या इतिहास में पढ़ी नहीं थी।

एक काल्पनिक डर खड़ा करके वास्तविक प्रतिबंधों की जंजीरों से प्रजा, गुलाम में तब्दील होती जा रही है, और भीष्म पितामह जैसे सज्जन, प्रबुद्ध और परिपक्व लोग खामोशी से तमाशाबीन बनकर चीरहरण देख रहे हैं।

प्रजा नामक द्रौपदी आज चीख रही है, चिल्ला रही है, शरण मांग रही है, डर से कांप रही है, क्रोध से लाल हो रही है, मगर आश्चर्य की पराकाष्ठा देखो, निरंकुश दुर्योधन और निर्लज्ज दु:शासन भविष्य के महाभारत का बीजारोपण करते ही जा रहे हैं।

वेब सीरीज़ में धर्मस्थानों में शूटिंग किये गये भद्दे दृश्य दिखाये जाने पर भी पांडव जैसे शक्तिशाली चुप हैं। लॉकडाउन से छोटे दुकानदारों, मजदूरों को पसीने की कमाई से प्राप्त होने वाली रोटी छीनकर भिखारी बनाने की साजिश पर भी सभी चुप हैं। निर्दोष लोगों के बेमतलब के चालान काट-काटकर जेब भरने वाले लुटेरों को देखने के बाद भी शिष्ट पुरुष चुप हैं। बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा देने के नाम से वीडिओ गेम, जुआ इत्यादि की लत लगाने पर भी अभिभावक खामोश हैं।

मालिक जो भी करे, सब कुछ (न्याय-अन्याय) स्वीकार कर लेना गुलाम का नैतिक धर्म होता है और इसी गुलामी की जब आदत हो जाती है तब तो मालिक हमेशा-हमेशा के लिए निश्चिंत हो जाता है।

वे लोग लाखों लोगों की चुनाव रैली करें तो भी आप कोर्ट में शिकायत नहीं कर सकते, मगर हम यदि मंदिर खोलने की बात करें तो हमें डराया जाता है, क्यों? क्योंकि वो मालिक है और हम गुलाम!!!

मालिक की प्रसन्नता के लिए अपनी जान भी कुर्बान कर दें तो भी कम ही है। गुलाम को शिकायत करने का नहीं, मालिक के खिलाफ सोचने का भी अधिकार नहीं है?

कमाल... कमाल... कमाल...

कुम्भकर्ण की नींद में से जागो, इन लोगों की चाल समझो, आप उनकी चुनावी रैलियों की शिकायत करेंगे तो भी फसोगे। ये लोग तो बोल देंगे, चलो, कोरोना फैल रहा है तो आप की बात भी मान ली जाये, वर्चुअल वोटिंग करवायेंगे। आप मतदान के लिए भी घर से मत निकलिए। आप घर की जेल में ही बंद रहिए, मोबाइल से ही वोट डाल दीजिए, जिस पार्टी को वोट देना चाहो, दे दो, हम मत-गणना करवा लेंगे।

बाद में तो आप की वोट बेंक का भी कोई अर्थ नहीं बचेगा। सब कुछ ऑनलाईन, चुनाव भी ऑनलाईन। भारत राष्ट्र की जनता बेचारी, भोली-भाली, पहले मुगलों ने लूटा, फिर अंग्रेजों ने लूटा, अब देशी अंग्रेज लूट रहे है।

हमने पिछले दो अंक में RFID माइक्रोचिप के बारे में आप को अवगत कराया था। हमें भी कल्पना नहीं थी, कि ये लोग इतनी जल्दी में हैं।

13 अप्रैल-2021 के दैनिक भास्कर के पेज पर आई खबर ने मुझे चौंका दिया, क्योंकि उसमें लिखा था कि, 'पेंटागन के वैज्ञानिकों ने बनाई शरीर में लगने वाली माइक्रोचिप, यह वायरस को पहचानेगी, फिर खून से फिल्टर करके निकाल देगी।' चिप त्वचा के नीचे लगेगी। इस

नई तकनीक को डिफेंस एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी (DARPA) ने विकसित किया है। अमेरिकी रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी माइक्रोचिप और तकनीक विकसित की है, जो आपके शरीर में रहे कोरोना के लक्षण को पहचान लेगी और बाद में

फिल्टर के जरिए खून से वायरस को निकाल लिया जाएगा।

इसे बनाने वाली टीम के प्रमुख महामारी विशेषज्ञ रिटायर्ड कर्नल डॉ. मैट हैपबर्न ने यह दावा भी किया कि कोविड-19 अंतिम महामारी होगी। अब हम भविष्य में किसी भी प्रकार के जैविक और रासायनिक हमले से बचाव के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

डॉ. हैपबर्न ने टिश्यू जैसा जैल दिखाते हुए बताया कि यह माईक्रोचिप में रहेगा और इसे इस तरह बनाया गया है कि यह खून की लगातार जांच करके रिपोर्ट देगा। आप जहां है, वहीं आप अपने खून की जांच कर सकते है। इसका रिजल्ट भी 3 से 5 मिनट के अंदर आपको मिल जाएगा।

अमेरिकी फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (FDA) ने इस मशीन को (जो चिप से वायरस का पता लगाने पर खून से उसे हटाने का काम करता है) 'आपातकालीन उपयोग के लिए मंजूरी दे दी है।'

इस खबर से इतना तो पक्का पता लग गया कि, हमें पूर्ण रूप से गुलामी की गर्त में धकेलने के लिए बहुत बड़ा आयोजन हो चुका है। एक डिफेंस (रक्षा विभाग) से जुड़ा वैज्ञानिक, हेल्थ (स्वास्थ्य) विभाग के वैज्ञानिक की तरह कैसे बयान दे सकता है? और वो ऐसा दावा कैसे कर सकता है कि, कोविड-19 अंतिम महामारी होगी? गुलामी से बड़ी बीमारी कोई नहीं है। गुलामी आने के बाद आप को कोई महामारी भी महामारी के रूप में महसूस नहीं होगी शायद इसीलिए वे लोग अपने बर्ताव से कह रहे हैं कि, या गुलामी पसंद करनी होगी या फिर मृत्यु नामक महामारी।

यदि कोई माईक्रोचिप लगवाने से इंकार कर दे तो?

तो भी इन लोगों के पास कईं सारे रास्ते हैं आप को गुलाम बनाने के लिए। माईक्रोचिप लगाने के लिए कईं सारे मूर्ख लोग तो दौड़ पड़ेंगे।

सब से पहले मैं...

मगर यदि कुछ प्रबुद्ध लोग रुक कर इनके खेल को सूक्ष्म दृष्टि से देखने का, समझने का प्रयास करेंगे, या रोकने का प्रयास करेंगे उस से पूर्व तो वे लोग सबको इस प्रकार बाध्य कर देंगे कि यह सभी को लगाये बिना चलेगा ही नहीं।

क्योंकि जो काम अक्ल से नहीं हो सकता,
वह काम बल से हो जाता है।

वो बल चाहे धनबल हो, धूर्तबल हो, शस्त्र बल हो या अन्य कोई भी प्रकार का बल हो। उन लोगों के पास ये सारे बल हैं। हमारे पास इन दुष्टों से बचने के लिए अब सिर्फ एक ही बल बचा है,

और वह है धर्मबल। (क्रमशः)

उपबृंहणा का उत्सव

"प्रियम्"

99.50% = Fail /

शायद हमारी बहुत गाथाएँ कंठस्थ ना हो सके, अट्ठाई हो ही ना सके, बहुत दान ना दे सकें, फिर भी हमारा मोक्ष हो सकता है। लेकिन संघ के प्रति के अहोभाव के बारे में हमारे यदि 99.50 मार्क्स भी आ जाएँ, फिर भी हमारा मोक्ष नहीं होगा।

संकल्प कीजिए कि संघ के एक भी सदस्य की यदि मुझसे निंदा हो जाये, या उनके प्रति खराब वाणी या बर्ताव हो जाये तो दूसरे दिन आयम्बिल करेंगे। ऐसे एक आयम्बिल से शायद लंबी ओली करने से भी ज्यादा लाभ मिलेगा। अगर यह सम्भव न हो तो दूसरे दिन दूध, घी, सब्जी आदि किसी भी वस्तु का त्याग कर सकते हैं।

हमारी सारी जद्दोजहद उन्नत बनने की होती है। लेकिन हमारी असली जरूरत तो नम्र बनने की है। उन्नत बनने का सही रास्ता भी नम्र बनना ही होता है।

त्रिपदी बाद में आती है, द्वादशांगी उसके भी पीछे आती है। सर्वप्रथम आता है "नमो तित्थस्स।" भगवान कहते हैं, 'संघ के प्रति नम्रभाव रखना ही शुरुआत है।' यह नहीं हुआ तो अभी शुरुआत भी नहीं हुई है। इसके बिना सारी साधना भ्रान्ति बन जाती है। अहम् वृद्धि करने में बड़ा जोखिम है।

वस्तुपाल उपाश्रय से निकल रहे थे। आर्थिक दृष्टि से साधारण स्थिति वाला एक श्रावक प्रभावना कर रहा था। प्रभावना में पतासा दिया जा रहा था। लोग जा रहे थे। वस्तुपाल को लोग सम्मान से

रास्ता दे रहे थे। वस्तुपाल को देखकर वह श्रावक लज्जित हो गया, क्या वे मेरे सामने हाथ फैलायेंगे? क्या मैं उनको पतासा दूंगा। कहाँ वे? कहाँ मैं? आधी क्षण में ही श्रावक ने निर्णय लिया और दरवाजे के पीछे छिप गया।

वस्तुपाल दरवाजे से सिर्फ चार कदम दूर थे, तीन... दो... एक... श्रावक को लगा कि उन्हें पता नहीं चला, और वे आगे निकल जायेंगे। पर वस्तु-पाल को सब पता था। वे दरवाजे के करीब गये, दरवाजे के पीछे छिपे हुए श्रावक के पास गये, हाथ फैलाया और कहा, "मेरी प्रभावना?"

पूरे संघ की आंखों से आँसू छलक उठे। वह श्रावण गद्गद् हो गया, उसकी आँखों से जैसे सावन-भादों बरसने लगे।

- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, बल्कि यह साधार्मिक वात्सल्य था।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह संघ बहुमान था।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह 'संघ का छोटे से छोटा आदमी भी मुझसे महान है' ऐसी संवेदना थी।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह उनके रोम-रोम में बसी शासन परिणति थी।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह स्वामित्वाभिमान की शमशान यात्रा थी।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह एक उपबृंहणा का उत्सव था।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह एक कायिक अनुमोदना थी।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह वात्सल्य की बारिश थी।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह संघ का सत्कार था।
- यह वस्तुपाल का फैला हुआ हाथ नहीं था, यह जीवंत जैनत्व था।

महामंत्री वस्तुपाल एक पतासे के लिए हाथ आगे करे, और सामने से याचना करे यह बात दुन्यवी गणित से समझ में आने वाली नहीं है। और देखा जाए तो लोकोत्तर गणित के भी समझ से बाहर है। लोकोत्तर गणित में भी पतासे की याचना का तो कोई स्थान ही नहीं है। बात संघ के सदस्य की थी।

हकीकत में वस्तुपाल की याचना पतासे की नहीं थी, साधर्मिक के विनय की थी।

हकीकत में वस्तुपाल की याचना पतासे की नहीं थी, पूर्ण नम्रता की थी।

हकीकत में वस्तुपाल की याचना पतासे की नहीं थी, परमपद की थी, जो इसके बिना मिलना संभव ही नहीं था।

वस्तुपाल ने अपने जीवन में सवा लाख प्रतिमाएँ भरवाई थीं। शायद उन प्रतिमाओं के निर्माण और

प्रतिष्ठा की घड़ी में जो पुण्य उपार्जित नहीं किया होगा, वह इस पतासे की याचना में उपार्जित किया होगा, क्योंकि यह चीज अधिक कठिन थी।

वस्तुपाल ने अपने जीवन में करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं का दान दिया था। पर शायद उससे जो पुण्य नहीं मिला होगा, वह इस पतासे से मिला होगा। क्योंकि यह कार्य उससे दुष्कर कार्य था।

दूसरे सुकृत फिर भी अहम् के साथ करना संभव है, किन्तु यह सुकृत बिना अहम् छोड़े करना संभव ही नहीं है।

- पतासे की याचना का अर्थ है, दातृत्व की अनुमोदना।
- पतासे की याचना का अर्थ है, साधर्मिक के प्रति सौहार्द।
- पतासे की याचना का अर्थ है, 'आपकी संघ भक्ति को धन्य है।'
- पतासे की याचना का अर्थ है, मुझे भी आपको देखे बिना नहीं चले गए, आपकी ऐसी भक्ति है।
- पतासे की याचना का अर्थ है, संघ का प्रसाद देवों को भी दुर्लभ है।
- पतासे की याचना का अर्थ है, यह कोई दो-चार आने की तुच्छ चीज नहीं, बल्कि यह तो विश्व की तमाम संपत्ति से भी नापा न जा सके ऐसी अमूल्य वस्तु है। क्योंकि इसमें संघ भक्ति के भाव मिले हुए हैं।

पतासे की अवगणना, 'जैन' की अवगणना है।

पतासे की अवगणना, जैनत्व की अवगणना है।

पतासे की अवगणना, संघ की अवगणना है।

पतासे की अवगणना, तीर्थंकर की अवगणना है।

यदि एक पतासा लिये बिना बड़प्पन के मद से निकल जाने से इतना पाप लगता है, तो संघ के सदस्य के साथ रुफ बिहेव करने से कितना पाप लगता होगा? उनके सामने विरोध करने से कितना पाप लगता होगा? उनके साथ ऐसी वैसी भाषा में बात करने से कितना पाप लगता होगा?

उपाश्रय के अंदर और बाहर लोग चित्रवत् खड़े थे। सभी स्तब्ध होकर यह दृश्य देख रहे थे। दुन्यवी दृष्टि से एक बड़ा आदमी एक छोटे आदमी के पास हाथ फैला रहा था। लोकोत्तर दृष्टि से परस्पर संघ पूजा चल रही थी।

वाह उस्ताद वाह!

मेरा यह सपना है। परस्पर संघपूजा – एक व्यक्ति भक्ति भावना में तबला बजाए, और दूसरा व्यक्ति उसकी तारीफ करे, 'वाह उस्ताद वाह!' सभी घटनाओं में ऐसा क्यों नहीं होता? हमने जब से दूसरों को बिरदाने के बदले कोसने का कार्य शुरु किया है, तब से हमारे पतन की शुरुआत हुई है।

बिरदाओ! अहम् छोड़कर बिरदाओ। दूसरों के छोटे से सत्कार्य की भी प्रशंसा करो। हम सत्कार्य कर सकते हैं, तप से शरीर कस सकते हैं, दान में जेब को घिस सकते हैं, पर जब तक हम अपना अहम् नहीं घिस सकते, तक तक हम दूसरों को हृदय से नहीं सराह सकते। किसी का सत्कार्य हमें हमारे अहम् पर प्रहार जैसा लगता है। अनादि का हमारा मत्सर रस हमारे ही नजदीक के जीवों पर अभिव्यक्त होता है।

परिणाम से मांसाहारियों के साथ हमें जितनी तकलीफ नहीं है उससे ज्यादा तकलीफ आयंबिल करने वालों के साथ है। होटल और लारी वालों से हमें जितनी तकलीफ नहीं होती, उससे ज्यादा तकलीफ हमें वर्षीतप करने वालों के साथ है। मस्जिद वालों के साथ हमें जितनी तकलीफ नहीं है, उससे ज्यादा तकलीफ हमें देरासर जाने वालों के साथ है। डान्स-बार के साथ हमें जितनी तकलीफ नहीं है, उससे ज्यादा तकलीफ उपधान वालों के साथ है।

इस झगड़े-फसाद में हम उस व्यक्ति के साथ-साथ न जाने कितनी आराधनाओं की आशातना कर बैठते हैं, क्या उसका हमें कभी आभास होता है? इसमें हम साधर्मिक की, धर्म की, संघ की शत्रुता अपने नाम लिख देते हैं, और परिणाम स्वरूप हमारी आत्मा कितने गहरे गड्ढे में गिर जाती है, क्या हमने कभी भी इसकी चिन्ता की है?

इतनी आदत डालनी है। 'वाह उस्ताद वाह!' एक छोटा-सा भी धर्म दिखे तो हृदय से उसकी अनुमोदना किये बिना नहीं रहना चाहिये।

याद आती है अमृतवेल की सज्जाय:

थोड़लो पण गुण पर तणो,
सांभळी हर्ष मन आण रे,
दोष लव पण निज देखता,
निर्गुणी निज-आत्मा जाण रे।

बस इन दो पंक्तियों की परिणति मिल जाए तो पूरा माहौल बदल जायेगा। और हमारी आत्मा का भविष्य भी बदल जायेगा।

The Untold History

गोडीजी का इतिहास

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

अथ श्री गोडी पार्श्वनाथजी की कथा

अखिल विश्व में 23वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान का प्रभाव अतिशय प्रख्यात है।

प्रायः ऐसा कोई जिनालय नहीं होगा कि जिसमें पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाजी प्रतिष्ठित न हो, साथ ही ऐसा कोई जैन श्रावक का घर नहीं होगा कि जिसमें पार्श्वनाथ भगवान की छवि (फोटो) न हो।

कहीं पर शंखेश्वर पार्श्वनाथ, तो कहीं नाकोडा पार्श्वनाथ के रूप में भगवान की भक्ति होती है। कहीं पर नागेश्वर पार्श्वनाथ, तो कहीं जीरावला पार्श्वनाथ के रूप में भगवान का पूजन होता है।

108 जिनके नाम हैं और गाँव-गाँव जिनके धाम हैं।

जिनकी मूर्ति स्वयं यंत्र है,

जिनका नाम स्वयं मंत्र है,

जिनकी पूजा स्वयं तंत्र है,

ऐसे प्रगट प्रभावी, सकल समीहित संपूरक, पुरुषादानीय श्री पार्श्वनाथ प्रभु में **"श्री गोडीजी पार्श्वनाथ"** प्रभु की महिमा को हम जानेंगे।

क्योंकि,

गत चौबीसी में जिस बिंब का निर्माण किया गया था, वर्तमान समय में जो प्राचीनतम प्रतिमा कही जाती है, और जिसकी महिमा सविशेष प्रसरित हो रही है, ऐसे श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु का इतिहास को तो अनेकानेक लोग जानते हैं।

किन्तु जिन्हें प्रकट हुए केवल 645 वर्ष* हुए हैं ऐसे श्री गोडीजी पार्श्वनाथ प्रभु का इतिहास बहुत कम लोग जानते हैं।

शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की महिमा आज खूब विख्यात हो गयी है। एक समय ऐसा भी था कि शंखेश्वरजी की पेढी को भोयणी की पेढी सहायक बनती थी। और आज प्रभाववंत श्री शंखेश्वर तीर्थ में से अनेक जिनालयों का जीर्णोद्धार हो रहा है।

*वि.सं. 2077 के अनुसार

प्राचीन तीर्थों में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान मूलनायक स्वरूप में विराजमान हो, ऐसे तीर्थ अधिक नहीं होंगे। किन्तु वर्तमान में जहाँ भी पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा होती है, वहाँ प्रतिमा का नामकरण "श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान" के नाम से अधिक होता है।

एक समय था जब श्री गोडीजी पार्श्वनाथ भगवान का प्रभाव ऐसा ही रहा है।

जहाँ-जहाँ प्रभु पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा होती थी, वहाँ-वहाँ "श्री गोडीजी पार्श्वनाथ भगवान" के नाम से नामकरण होता था।

645 वर्ष में 150 जितने प्राचीन तीर्थों में मूल-नायक के रूप में श्री गोडीजी पार्श्वनाथ भगवान विराजमान हैं।

पालीताणा आदि अनेक तीर्थों में गोडीजी पार्श्व-नाथ भगवान के पगलिए (पादुका) प्रतिष्ठित है।

अनेक छ'री पालक संघ गोडीजी दादा के दर्शनार्थ निकले हुए हैं। उस समय जब किसी के घर में कोई बीमार पड़ता था, तब लोग गोडीजी दादा के नाम से दीपक प्रज्वलित करके प्रार्थना करते थे और रोग दूर हो जाता था।

प्रभुजी का प्रभाव दूर-सुदूर तक फैला हुआ था।

किन्तु काल की असर से मूल गोडीजी पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा और उनके इतिहास की बातें विस्मृतप्राय: हो गयी हैं।

ना ही मूल प्रतिमा की जानकारी प्रसिद्धि में रही, और ना ही उसके ऐतिहासिक तथ्यों की जान-कारी।

और हाँ!

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ हो या श्री गोडीजी पार्श्वनाथ,

हैं तो दोनों पार्श्वनाथ भगवान ही, यहाँ कोई भिन्न-भिन्न भगवान नहीं है।

हमें जो प्रभाव देखने के लिए मिलता है, उसमें पार्श्वनाथ भगवान ही नहीं अपितु अधिष्ठायक देवों की जागृति एवं भक्तों के भावों की इच्छा-आकांक्षा ही प्रमुख कारण है।

सांसारिक जीव सामान्यतः स्वार्थी होते हैं, जहाँ उनका स्वार्थ पूर्ण हो सकता है, वहाँ वे भागते हुए जाते हैं।

यह स्वार्थभाव इतना खतरनाक होता है कि, यदि प्रभु भी इनके स्वार्थपूर्ति के साधन ना लगें, तो ये लोग प्रभु को भी बदलने में देर नहीं लगाते।

श्री गोडीजी पार्श्वनाथ भगवान से जो हम दूर हुए हैं, उसके पीछे भी ऐसा ही कुछ कारण लगता है।

तो आइए!

आज हम इतिहास के उन पन्नों को उलटते हैं,

और जान लेते हैं मूल गोडीजी पार्श्वनाथ प्रभुजी की बातें!

'पधारिए गुरुदेव! पधारिए!'

जन-जन के मुख पर स्वागत के शब्द थे।

पाटण की धन्य धरा आज गुरु भगवन्त के पावन कदमों से धन्य-धन्य बनी थी।

वि.सं. 1431, ई.स. 1357 के वर्ष की बात है।

पूज्य आचार्य श्री महेन्द्रप्रभसूरि म.सा. के शिष्य पूज्य आचार्य श्री अभयदेवसूरि म. सा. को वन्दन करके सभी आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। जिज्ञासुओं की ज्ञान-पिपासा को प्रवचन के माध्यम से गुरुदेव शांत कर रहे थे।

पाटण संघ में अनेक श्राद्धवर्य हैं, जिनके केवल मन में ही धर्म नहीं अपितु मन भी धर्म में बसा है। इन सभी श्राद्धवर्यों में एक परम भक्तिवन्त श्रावक थे, जिनका नाम था खेतसिंह।

गुरुवन्दन कर सुखशाता पृच्छा करने का इस श्रावक का नित्यक्रम था।

एक स्वर्णिम दिवस पर पूज्य आचार्य भगवन्त की दृष्टि इस श्रावक पर स्थिर हुई। उनके ललाट पर शासन के लिए भव्य सुकृत करने का पुण्य झलक रहा था।

पूज्यश्री ने खेतसिंह को कहा, "प्रभु के उपकारों के समक्ष कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के लिए आपको भव्य जिनालय का निर्माण करना चाहिए!"

"गुरुदेव! मनोरथ तो है ही और उसमें आपश्री ने प्रेरणा की है अर्थात् अब यह भव्य सुकृत होगा ऐसी श्रद्धा दृढ हो गई है।"

"शुभस्य शीघ्रम् ॥"

"आप आशीर्वाद दें गुरुवर!"

तत् पश्चात् शुभ मुहूर्त देखकर खनन विधि की गई।

शिल्पशास्त्र में पारंगत सोमपुरा को आमन्त्रित किया गया। शिला स्थापन आदि से लेकर शिखर तक का निर्माण अविरत रूप से चला।

खेतसिंह भी उदारता से कारीगरों से लेकर सोमपुरा तक सभी को खुश रख रहे थे।

जिनप्रतिमा के निर्माण के लिए कुशल शिल्पी हृदय में श्रद्धाभाव को धारण कर तन-मन से पत्थरों को आकार दे रहे थे।

टन... टन... टन... पत्थर का प्रतिमा में परिवर्तित होने के समय का कर्णमधुर संगीत गूंज रहा था।

देखते-देखते ही 1 वर्ष पूर्ण होने आया, अब तो देवगृह (जिनालय) प्रभु की प्रतिष्ठा के लिए प्रतीक्षा रूप में खड़ा हो गया था।

अब खेतसिंह के मन में भव्यातिभव्य अंजन-शलाका-प्राणप्रतिष्ठा करने के विचार उमड़ने लगे।

जिनमन्दिर प्रेरक गुरुदेव की निश्रा में उपस्थित

होकर बहुमान पूर्वक वन्दना करके करबद्ध विनती की,

"हे सन्मार्ग दाता गुरुवर!"

"आपके मार्गदर्शन पर चलते-चलते मैं सुकृत करने के लिए तत्पर बना। आपके आशीष से मैं सफलता के द्वार पर पहुँचा हूँ।

हे परम उपकारी सूरिवर! देवविमान सदृश जिनमन्दिर प्रभु के आगमन के बिना सूना-सूना है। आप पधारें! अंजनशलाका-प्राणप्रतिष्ठा करें! हम पर उपकार करते हुए हमारे मनोरथ को पूर्ण करें!"

"ओमिति" पूज्यश्री ने (सकारात्माक प्रतिसाद) प्रत्युत्तर दिया।

खेतसिंह पाटण लौटे और पूज्य गुरुदेव के स्वागत की भव्य तैयारी करनी शुरु की। साथ ही साथ प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए अनेक संघों में आमन्त्रण भेजे गए।

वि.सं. 1432, ई.स. 1376 के मार्गशीर्ष महीने में कृष्ण पक्ष की शुभ तिथि पर पूज्यश्री का पाटण में भव्य स्वागत के साथ प्रवेश हुआ, और तत् पश्चात् महोत्सव का शुभारंभ हुआ।

खेतसिंह के मन में उल्लास फूले नहीं समा रहा था।

देश-देशांतर से सभी लोग प्रतिष्ठा महोत्सव में पधार रहे थे। महोत्सव में हो रहे पवित्र विधान में सभी भाविक उत्साह के साथ जुड़ रहे थे।

और...

वि.सं. 1432, ई.स. 1376 फाल्गुन शुक्ल द्वितीया, शुक्रवार के शुभ मुहूर्त पर पूज्य आचार्य श्री अभयदेवसूरि म.सा. के वरदहस्त से श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा हो गई।

मीठडीया गोत्र के ओसवाल वंश के खेतसिंह का ललाट 'संघपति' के तिलक से अलंकृत हुआ और कण्ठ में माला पहनाई गई।

प्रभु की प्रतिष्ठा और शिखर पर ध्वजा लहराकर खेतसिंह स्वयं के जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रहे थे। उन्होंने प्रतिष्ठा प्रसंग पर पधारे हुए सभी की भक्ति की, संघपूजन किया।

और...,

इसके साथ जिनशासन के इतिहास में एक सुवर्ण पृष्ठ जुड़ गया।

किन्तु...

किसे पता था कि भविष्य के अंतर में क्या समाया है।

जैसे श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की प्रतिमा अनेक जगह पर स्थानांतरित होती रही है, वैसे ही श्री गोडीजी पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा भी स्थानांतरित होने वाली है।

(क्रमशः)

कल्याणकारी क्रिया

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

नमस्ते मित्रों!

कोरोना नाम के राक्षस ने वापस अपना सिर उठाया है। फिर पूरे देश में कोहराम मच गया है। जो परिस्थिति विषम है, उसमें मीडिया पेट्रोल छिड़कने का काम करता है और सब कुछ ज्यादा ही मुश्किल बनता जा रहा है। डर से सहमा हुआ है हर आदमी, चहुँ और भय का माहौल छाया हुआ है।

पर मेरे दोस्त। हिम्मत तो रखनी ही पड़ेगी। हिम्मत छोड़ने से काम चलने वाला नहीं है। हौसला रखिए, डरना नहीं है, सावधानी रखनी है, समाधान रखना है, आशावादी बनना है। जीवन की बागडोर सर्व समर्थ परमपिता प्रभु के हाथों में सौंपकर बड़ी सावधानी के साथ सब कुछ करना ही है। डरने से, कि कोरोना सिर्फ धुएँ से या हवा से ही फैलता है, ऐसा नहीं है, डरने से भी कोरोना बढ़ता है, और ज्यादा फैलता है।

देशभर में अन्य सभी गतिविधियाँ कम होने लगी हैं। घर से बाहर निकलना, घूमना, अन्य कार्य करना संभवत: टालना ही चाहिए और घर पर बैठकर सिर्फ यूँ ही समय व्यतीत नहीं करना चाहिए, किंतु कुछ न कुछ धार्मिक क्रिया में समय गुजारना चाहिए।

युवा मित्र ज्यादा देर तक हाथ पर हाथ रखे बैठ नहीं सकते, वो भागते हैं, दौड़ते हैं, उसे काम चाहिए, उसे कुछ न कुछ क्रिया करनी है। शरीर ऊर्जावान है, मन उल्लास से भरा हुआ है। दिल में अरमान है, आंखों में सपनों का सागर छलकता है। कुछ न कुछ कर देने को आतुर है प्राण...।

ऐसे सभी युवा मित्रों को सादर सलाम है। अपने उत्साह को ऐसे ही बनाए रखें, अपनी आशाओं को ऐसे ही जीवंत रखें, हमेशा कुछ न कुछ नया करने के लिए तैयार ही रहें।

पर इसके साथ एक बात याद रखें, कि हमेशा विवेक को जीवित रखें। जैसे, क्या खाना और क्या न खाना, इस विषय में भी विवेक होना चाहिए, वैसे ही क्या करना और क्या न करना, इस विषय में भी स्पष्ट विवेक होना चाहिए।

प्रभु महावीर कहते हैं कि, करो तो ऐसा करो, जिससे आपका भला हो और जनता का भी भला हो।

आप कहेंगे कि अगर सभी का अच्छा हो ऐसे ही कार्य हमें करने है, तो फिर गुरुदेव हमें भगवान की पूजा करने को क्यों कहते है? क्या हमारी प्रभु पूजा से सभी का कल्याण होता है?

गुरु भगवंतो को वंदन करना हमें धर्म ने ही सिखाया है, पर क्या उससे सभी का कल्याण हो पाना संभव है? मुमकिन है?

इससे तो अच्छा यही है कि हम गरीबों की सेवा करें, जरूरतमंदों को दान दें, सभी की सहायता करें, यही क्रिया हमें करनी चाहिए।

तो मैं आपको बता दूँ, यह सब करने का प्रभु ने स्वयं कहा ही है। जीवदया और अनुकम्पा में जैन समाज हमेशा अग्रसर रहा है। आज पूरे देश में जितनी भी गौशालाएँ चल रही हैं, उनमें से सबसे ज्यादा जैन गौशाला-पांजरापोल है। मानवता की सेवा में जैनों का करोड़ों, अरबों रुपया खर्च होता है।

परन्तु हम जैन सिर्फ मानवता की सेवा में ही नहीं मानते, हम इतने से रुक नहीं जाते। हम चाहते हैं कि मानवता का उत्थान भी हो। हम ऐसी क्रिया करना चाहते हैं जिससे अपना और औरों का सिर्फ भला ही न हो, परंतु कल्याण भी हो।

और प्रभु पूजा, गुरु वंदन, त्याग, तपस्या, बड़ो की एवं गुरुओं की भक्ति वेयावच्च इत्यादि क्रियाओं से हमारा अपना व दूसरों का कल्याण होना निश्चित है।

इसीलिए कहूँगा, कि इस मुश्किल समय में हम भगवान द्वारा बताई हुई ढेर सारी क्रियाएँ करें, करते ही रहें। घर में प्रभु की प्रतिमा लाकर उनकी पूजा-अर्चना करें, तपस्या करें, गाथाओं का पाठ करें, सामायिक करें, प्रतिक्रमण करें। बार-बार ऐसे लॉकडाउन जैसे मौके नहीं मिलते। कोरोना की इस आफत को अवसर में बदल दें। क्योंकि हम तो बनिये हैं, पक्के व्यापारी...।

॥ क्रिया पद ॥

(तर्ज : है प्रीत जहाँ की रीत सदा...)

तीर्थंकर ने जो कही है क्रिया, मैं उसका पालन करता हूँ,
मेरे अंतर के दोषों का मैं ऐसे गालन करता हूँ...

आत्मा पर कितने बरसों के कर्मों का भार इकट्ठा है,
घुसपैठी दोष की जोरतलब बेचारा जीव निहत्था है,
किरिया शस्त्रों को सजधज मैं उन कर्मों से ना डरता हूँ... मेरे... ॥1॥

जो मार्ग बताया जिनवर ने, वो सक्षम है बलशाली है,
जो किरिया से मुँह मोड़े उनका आत्म खजाना खाली है,
है नेक सही यह मार्ग, पथिक मैं उस पर हरदम चलता हूँ... मेरे... ॥2॥

गुण प्रगट आती है किरिया पाए गुण में स्थिरता देती है,
और गुण पाकर जो चूक गया, उसको भी ऊपर लेती हैं,
मैं क्रिया राह का राही बन जनपद को निश्चित करता हूँ... मेरे... ॥3॥

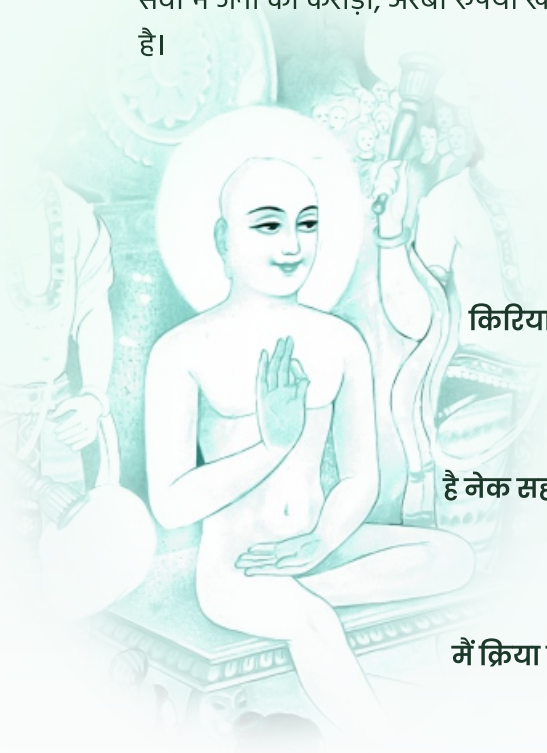

अलग दृष्टिकोण

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

गाँव में एक बाँसुरी बेचने वाला बाँसुरी की सुरीली तान बजाता-बजाता गलियों में घूम रहा था। एक बालक ने मम्मी से जिद की, 'मम्मी! मुझे भी बाँसुरी चाहिए।' मम्मी ने 10 रु. की बाँसुरी खरीद ली। बालक ने बाँसुरी बजायी पर सुर अच्छा नहीं लगा। वह बोला, 'मम्मी! दूसरी ले लो, यह नहीं।' दूसरी बाँसुरी ली, उसमें से भी अच्छा सुर नहीं निकला। 'मम्मी! ये भैया जो बाँसुरी बजा रहा है वो ही खरीद लो।' बाँसुरी वाले ने अपनी वाली बाँसुरी दे दी। बालक ने उसमें भी प्रयत्न किया, फिर भी सुर अच्छा नहीं निकला। वह बोला, 'मम्मी! जाने दो। सारी ही बाँसुरियाँ खराब हैं, मुझे नहीं चाहिये।'

यह बालक यदि दुनिया की सारी बाँसुरियाँ बजा ले, फिर भी अच्छा सुर नहीं निकलेगा, क्योंकि बाँसुरी बदलने से सुर अच्छा नहीं निकलता, पर बाँसुरी बजाने की शैली बदलने से अच्छा सुर निकलता है।

"बेलन बदलने से अच्छी रोटी नहीं बनती है; तरीका बदलने से रोटी अच्छी बनती है।"

"पैन बदलने से अच्छे अक्षर नहीं निकलते, सुलेखन की शैली बदलने से अच्छे अक्षर निकलते हैं।"

"अच्छा बैट मिल जाने से हम कोई विराट कोहली नहीं बन जाते हैं।"

हाथ-पैर हिलाने मात्र से हम अच्छे स्वीमर नहीं बन सकते हैं।

संक्षिप्त में बात इतनी ही है कि,

आपको क्या मिला है यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, आप उसका कैसा उपयोग करते हैं, यह महत्व रखता है।

"जिस छुरी से सब्जी छीलते हैं, यदि उसका प्रयोग ठीक से नहीं किया तो उँगली भी छिल सकती है।"

उसी तरह, कर्मबंध का आधार आप क्या करते हैं, उस उपर उतना नहीं है, जितना आप कौन से अध्यवसाय, यानी विचार से करते हैं, उस पर है।

For example, आप आम खाने का कार्य कर रहे हैं, उसमें आपको मजा आ रही है। अब यह कार्य कौन-कौन से प्रकार से हो सकता है, और वह कौन-कौन से विचारों से भी मजा लेकर कर सकते है, कि जिसके आधार पर शुभ-अशुभ कर्मबंध हो सकता है:

- आम को चुराकर भी खा सकते हैं और मजा ले सकते हैं।
- आम किसी से पूछकर ले सकते हैं।
- आम मुफ्त में लेकर खा सकते हैं।
- आम दूसरों के पैसे से खा सकते हैं।
- आम खुद के पैसे से लेकर खा सकते हैं।
- पहला आम प्रभु को नैवेद्य चढ़ाकर फिर खा सकते हैं।
- पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों को वहोरा कर फिर खा सकते हैं।
- आम दूसरों को खिलाकर खा सकते हैं।
- अपने हिस्से के सारे आम दूसरों को देकर मजा ले सकते हैं।
- सारे आम दूसरों को देकर तीसरे को बताये बिना मजा ले सकते हैं। (गुप्तदान)
- मैंने दूसरों को दिया है, इस बात को भूलकर भी मजा ले सकते हैं।
- साक्षीभाव से, ज्ञाता-दृष्टाभाव से इस कार्य को देखते हुए भी मजा ले सकते हैं।

कार्य एक ही है, पर विविध विचारधारा से अलग-अलग कार्यशैली से उसके परिणाम में शुभ/अशुभ कर्मबंध में फर्क पड़ता है।

चलिए आज से संकल्प करते हैं कि,

दिन में कम से कम एक कार्य इस तरह करूँगा कि
जिसके अलग-अलग कम से कम 10 एन्गल–दृष्टिकोण को सोचकर
फिर उसमें जो तीव्र शुभ कर्म का अनुबंध कराए उस शैली से कार्य करने का प्रयत्न करूँगा।

Temper : A Terror – 12

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(अमरदत्त और रत्नमंजरी के शादी के पश्चात राज-पुरोहित के पास सेनाधिपति आए और राजा के अकाल मरण के दुःखद समाचार दिए। आगे क्या होता है पढ़िए।)

कोयल के कंठ से निकलते मधुर संगीत के जैसे शब्दों का संगीत पूरी प्रजा के मुँह से निकल रहा था।

'क्या स्त्री मिली है अमर को...'

'क्या धैर्य है मित्रानन्द का...'

'अमर का भाग्य सच में ही अमर - यानी देव जैसा है।

ऐसे कितने ही वाक्य वातावरण को संगीतमय कर रहे थे।'

कभी भी अपनी खुशी नहीं जताने वाला राज-पुरोहित भी प्रजा का उत्साह और इस अकल्प्य घटना को देखकर अपनी खुशी को व्यक्त करने के लिए अमर के पास आया। राजपुरोहित के लिए भी यह घटना स्वप्नवत् ही थी।

"अमर..." पहला शब्द राजपुरोहित ने बोला, और उतने में ही प्रजा में एक सन्नाटा छा गया। अचानक सब के शांत हो जाने पर राजपुरोहित के शब्द भी अपने गले में ही अटक गये।

प्रजा में अचानक छा गई शांति का कारण जानने के लिए अमर, मित्रानन्द, राजपुरोहित सभी के चेहरे एक साथ प्रजा की शांति के उद्भव स्थान की ओर मुड़े।

धूल की डमरियाँ वातावरण में उड़ रही थीं। राजपुरोहित की आँखें उस तरफ मँडरा रही थीं। राजसैनिकों के अधिपति को देखकर राजपुरोहित के हृदय में एक अव्यक्त भय फड़फड़ा रहा था। उसके चेहरे की लकीरें कुछ अनिष्ट का सूचन कर रही हो, राजपुरोहित को ऐसा अनुभव हो रहा था।

राजपुरोहित के पास अधिपति का घोड़ा आया। अधिपति नीचे उतरा। राजपुरोहित के सामने वह झुका और किसी को भी नहीं सुनाई दे वैसी आवाज में राजपुरोहित के कानों में अधिपति कुछ गुनगुनाया। राजपुरोहित के चेहरे की रेखाएं तंग होती गईं।

'ॐ नमः शिवाय...' शब्द राजपुरोहित के मुँह से निकल पड़े।

समुद्र में आ रही भरती की तरह दुःख की भरती समस्त प्रजा पर छा गई।

दुःख, सुख, फिर से दुःख... एक ही दिन में तीन-तीन ऐसे प्रसंग घट चुके थे, कि जिसने प्रजा को किंकर्तव्यमूढ़ कर दिया था।

मौत का मचान महोत्सव में परिवर्तित हो जाने के बाद फिर से मौत में परिवर्तित हो गया था। एक अकल्पनीय झटका प्रजा को लग गया था।

राजपुरोहित के मुख की दयनीय स्थिति को देख-कर प्रजा समझ चुकी थी कि कुछ अनिष्ट समाचार सुनने को मिलने वाले हैं। सभी चित्रवत् एकदम स्थिर हो गये थे। मित्रानंद की मनःस्थिति भी अनिष्ट घटना के दबाव के कारण चंचल हो गई थी।

"प्रजाजनो!" गहरी, शोक भरी आवाज से पुरोहित ने कहा। प्रजा के रोम-रोम में दुःख की अनुभूति फैल गई।

"केशवाधिपति ने बहुत ही दुखद समाचार दिये हैं। मेरे मुँह से वे शब्द नहीं निकल रहे हैं, पर...

राजपुरोहित की आँखों से अश्रु निकल आये। पहली बार प्रजाजनों ने राजपुरोहित को इतने तनाव में देखा था।

"हमारे राजा बिना कोई संतान के आज अचानक दिवंगत...." राजपुरोहित के गले में आवाज अटक गई। वे धरती पर निढ़ाल होकर गिर पड़े।

समग्र प्रजा दंग रह गई। अमर के चेहरे पर भी गहरा शोक छा गया। रत्नमंजरी की आँखें बिना कारण सहज ही बहने लगी। पीछे से अनिष्ट के सूचन को देने वाला घंटनाद होने लगा। अंतःपुर से रोने की आवाज सभी को सुनाई दे रही थी। वह रुदन कल्पांतकाल के रुदन से भी ज्यादा भयावह था।

क्षीर-सागर के गहराई की गंभीरता जैसी गंभीरता

सभामंडप में छाई हुई थी। लाखों की जनमेदनी राजप्रासाद के बाहर खड़ी हुई थी।

"राजपुरोहित जी! अब क्या? आगे कैसे बढ़ेंगे?" सभी के चेहरे पर घूम रहे प्रश्न को मंत्री सुबोध ने वाचा दी। सबकी नजरें लगातार राजपुरोहित की ओर ही एकटक बंधी हुई थी।

राजपुरोहित ने पाटलिपुत्र के राज्य को कभी भी अपनी सेवा से वंचित नहीं रखा था। और इसीलिए पाटलिपुत्र को एक गौरवशाली स्थान पर पहुँचाने में राजपुरोहित की अहम् भूमिका थी। पर आज पूछा गया प्रश्न उनके लिए भी नया था।

"राजन्! आप इतनी जल्दी हमें छोड़कर क्यों चले गये।" दिन में लगभग सौ बार राजपुरोहित के मन में यह वेदना उठती थी। राजपुरोहित को भी अपने सामने रखे गये प्रश्न का जवाब नहीं मिल रहा था।

"जब भी तुझे राह ना मिले तो शास्त्रों की चाह करना।" राजपुरोहित को अपने गुरु के वचन याद आ गये। राजपुरोहित ने अपने पास पड़ी हुई एक पोथी अपने हाथ में ली। मंत्र प्रकरण, तंत्र प्रकरण, अनाथ प्रकरण; पन्ने फेरते-फेरते राजपुरोहित रुक गये।

अपना संपूर्ण ध्यान केंद्रित करके राजपुरोहित कुछ पढ़ने लगे। राजसभा में बैठे हुए सदस्यों के चेहरे पर कुछ आशा की किरणें दिखाई दी।

राजपुरोहित के चेहरे पर एक अजब सी रौनक अचानक आ गयी। मंत्रीश्वर अपने स्थान से थोड़े आगे आये। राजपुरोहित ने ऊपर देखा।

"मत्रीश्वर सुबोध!" गजब का आत्मविश्वास पुरोहित के कंठ की आवाज में सुनाई दी। प्रश्न का हल राजपुरोहित को मिल गया था।

"जी..." चेतक की तरह राजपुरोहित के शब्दों को पी रहे मंत्रीश्वर खड़े हो गए।

"पाँच वस्तुएँ तैयार करनी है।"

ध्वनि-विस्तारक यंत्र को भी फीका कर दे ऐसी आवाज घोषणा करने वाले के कंठ से निकल रही थी। उसकी आवाज में गहराई थी।

"सुनो! सुनो! सुनो! हमारे राजा की बिना संतति के मृत्यु हो जाने से राज्यसभा ने नये राजा बनाने के लिए पाँच वस्तुएँ तय की हैं। जिस व्यक्ति के द्वारा ये पाँच वस्तुएँ पूर्ण होगी उसे नया राजा घोषित किया जायेगा।" पीछे से जोर से ढोल बजने लगा। ढोल की आवाज पूरी नगरी में गूँजने लगी।

"और यह विधान दैनिक है। हमारे शास्त्रों में यह विधान दिया गया है। देखो!" घोषणा करने वाले ने राजपुरुषों के द्वारा बताए एक स्थान की ओर इशारा किया। वहाँ एक हाथी, एक घोड़ा खड़ा हुआ था। उन पर राजपुरोहित कोई मंत्रोच्चार कर रहे थे। राजपुरोहित की ओर सभी की दृष्टि गई।

"राजपुरोहित एक के बाद एक पाँच वस्तुओं को मंत्रवासित कर रहे थे। फिर से घोषणा करने वाले की आवाज सुनाई दी। ये पाँच वस्तुएँ जिस पर प्रसन्न होगी, वह सौभाग्यशाली व्यक्ति हमारा राजा बनेगा।... बोलो राजाधिराज की..."

"जय..." प्रजाजनों के मुँह से जयघोष निकला। राजपुरोहित ने अपनी आँखें बंद की और प्रभु को प्रार्थना की।

'हमें अच्छा राजा देना प्रभु।'

कमल की पँखुड़ियों की तरह एकदम अलिप्त होकर अमर और रत्नमंजरी अपनी घटनाओं का संस्मरण कर रहे थे। मित्रानन्द उन दोनों प्रेमियों को अलग छोड़कर कुछ दूरी पर खड़े होकर राज्य में चल रहे कोलाहल को देखने में मशगूल था।

"अब हम कहाँ रहने वाले हैं? मुझे दूसरे के पास हरण करवा कर तो आप ले आये, पर मैं राजपुत्री हूँ। मुझे राजपुत्री के रूप में रखने की हैसियत तो

आपके पास है ना?" रत्नमंजरी अमर की ओर देखकर हँसने लगी। अमर का चेहरा भी रत्नमंजरी की बात सुनकर गंभीर सा हो गया।

इस चीज का विचार तो अमर ने कभी भी किया ही नहीं था। अपने मित्र मित्रानन्द के लिए उसने अपनी राजगद्दी भी कुर्बान कर दी थी।

अमर का चेहरा देखकर रत्नमंजरी हँस पड़ी।

"मैं तो ऐसे ही कह रही थी। आप के मिल जाने के बाद मुझे और कुछ भी नहीं चाहिये। आपका भाग्य..." रत्नमंजरी अपना वाक्य पूर्ण करे, उसके पहले दोनों को जबरदस्त कोलाहल सुनाई दिया, दोनों बाहर गये। बाहर बहुत-से लोग खड़े-खड़े किसी वस्तु को देख रहे थे।

अमर ने भी उस तरफ दृष्टिपात किया। अमर ने सामने से हाथी को आते हुए देखा। अमर के आश्चर्य की सीमा नहीं थी। सामने हो रही घटनाओं को देखकर वह दंग रह गया। पहली बार उसने देखा कि छत्र अपने आप हवा में चल रहा था। उसी तरह हवा में चल रहे कलश और चामर को भी अमर ने देखा।

रत्नमंजरी के लिए भी यह दृश्य एक कौतुक था।

"यह क्या है?" ऐसा कुछ रत्नमंजरी पूछने जाये उससे पहले तो हाथी अमर के सामने आकर खड़ा हो गया। मित्रानन्द अमर के पास आ गया। राज-पुरोहित हाथी के पास ही खड़ा था।

समस्त प्रजाजनों की दृष्टि भी उसकी तरफ थी। अचानक हाथी ने गर्जना की। पास खड़े घोड़े ने भी अपनी आवाज निकाली "अहंहंहं...अहंहंहं"

"क्या चल रहा है?" अमर को कुछ समझ नहीं आया। उतने में ही छत्र अपने आप आकाश में उड़कर अमर के मस्तक पर स्थिर हो गया। चामर आजू-बाजू में ढलने लगे। कलश आकर अमर के पैरो पर लुढ़क गया।

"बोलो, अमर महाराजाधिराज की..." हर्ष से भरी हुई आवाज मित्रानन्द के मुँह से निकल पड़ी।

"जय..." जयकारे की आवाज से पूरा पाटलिपुत्र गूँज उठा। पाटलीपुत्र को अपने नये राजा मिल गये थे।

(क्रमशः)

LEARNING
MAKES A MAN
PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- “Faithbook” नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को “Faithbook” नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से “Faithbook” के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

SAYYAM GRAPHICS
80878 75828 | 92704 56160